Rs. 5.00/-

Look N Learn Children's Jain Magazine

10th January 2018 I Every Fortnight I English, Hindi & Gujarati

दिक्षा

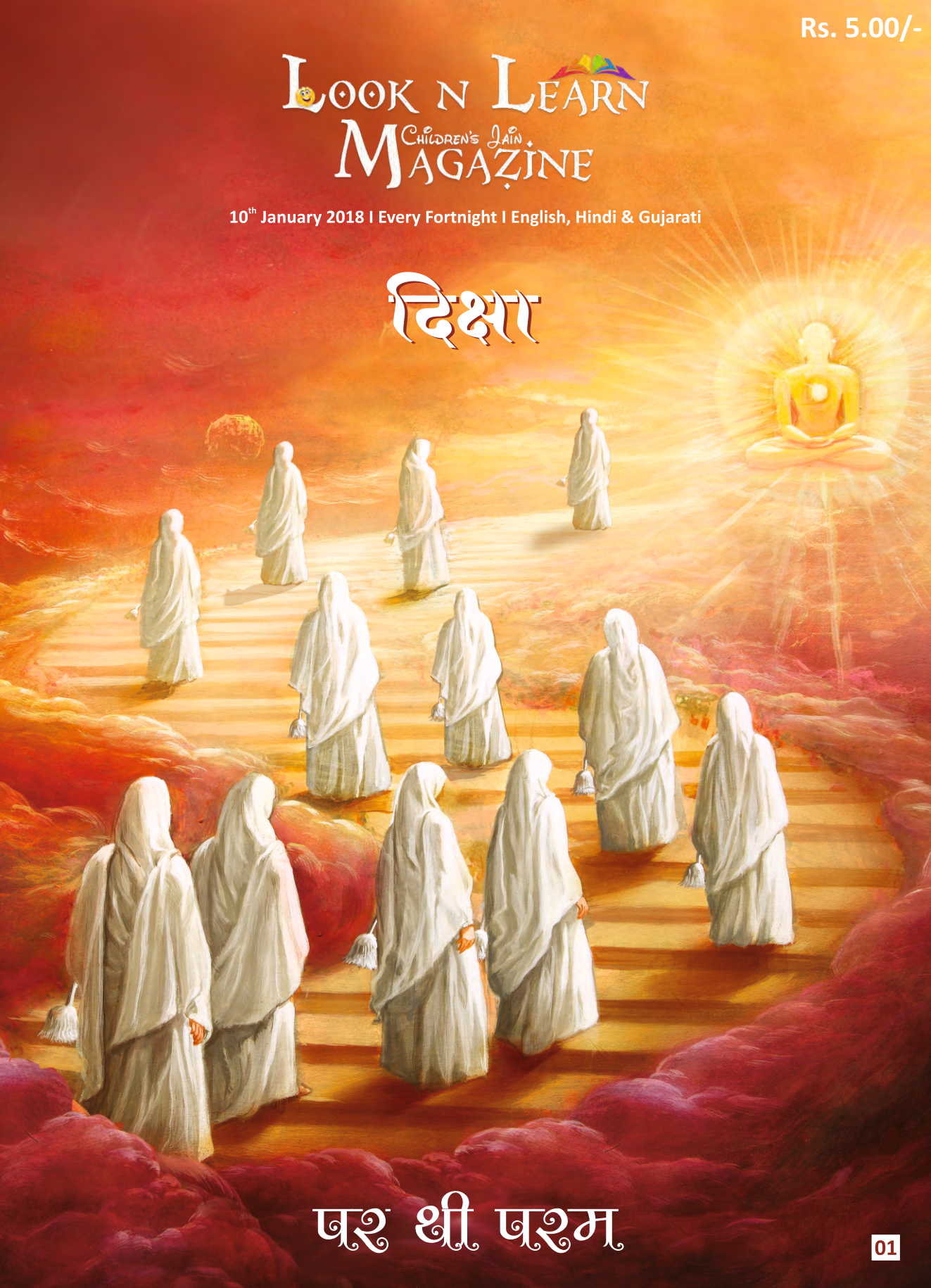

पर थी परम

Year - 11, Vol: 10, Issue: 11, Date: 10.01.2018
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

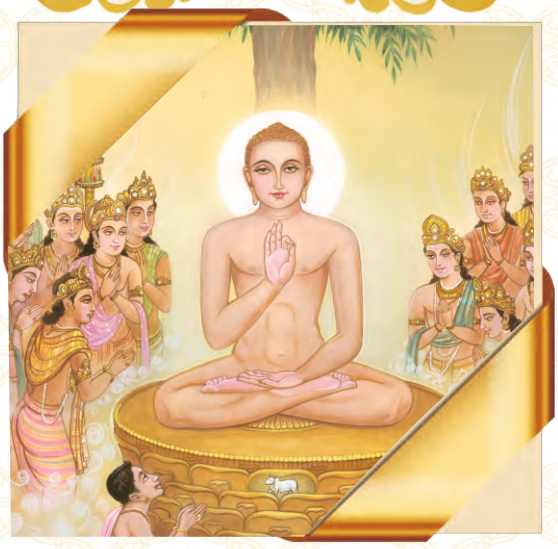

इस अनादि अनंत संसार में जीव विभिन्न योनियों में परिभ्रमण करता हुआ कभी देव गति, कभी तिर्यंच, कभी मनुष्य और कभी नरक गति में जन्म लेता रहता है।

In this eternal Universe, our soul revolves and takes birth in different Gati's like Dev, Manushya, Tiryanch and Narak .

जीव के सुख दुःख और जन्म मरण का मुख्य कारण है उसके भीतर रहे हुए राग और द्वेष। कोइ भी आत्मा जिन – पद प्राप्त कर सकता है, सर्वज्ञ बन सकता है, परमात्मा बन सकता है, किन्तु तीर्थंकर हर कोई आत्मा नहीं बन सकता। क्योंकि तीर्थंकर एक विशेष पुण्य प्रकृत्ति का परिणाम है। जो तीर्थ की स्थापना करते है वे तीर्थंकर परमात्मा कहलाते है। आओ बच्चों, आज हम परमात्मा श्री अजीतनाथ स्वामी का जीवन चारित्र जाने।

The Main reason of our happiness and sorrow in the cycle of birth and death is Raag and Dwesh. Any soul can achieve 'Jin-Pad' and any soul can become Parmatma, but Tirthankar – Pad cannot be achieved by every soul, because Tirthankar is the result of one's special Punya Prakruti (Good deeds). One who establishes Tirth is called Tirthankar. So kids, let's know more about our Parmatma Shri Ajitnath Swami's jeevan charitra.

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

आपणा द्वितीय तीर्थंकर अेटले श्री अजीतनाथ भगवान!

"भाव तेवो भव"

भवमां भावो शुभभाव बनशो भाविना भगवान...

Parmatma Shree Ajitnath - Previous Birth

परमात्मा अजितनाथ का जीव, पूर्व-भव में महाविदेह क्षेत्र में विमलवाहन नामके प्रतापी राजा थे। एक मुनि के सत्संग-प्रभाव से राजा को संसार से आसक्ति हो गई और वे श्रमण बनकर उग्र तप, ध्यान आदि में लीन रहने लगे। उसी भव में तीर्थंकर-नाम कर्म का उपार्जन किया। आयुष्य पूर्णकर देव लोक में देव बने।

The soul of Parmatma Ajitnath, in his earlier incarnation, was a great king named Vimalvahan in Mahavideh Kshetra. Due to the pious influence of one ascetic, the King got detached from wordly life and renounced the world. He indulged himself in revere Penance and meditation. He earned Tirthankar naam Karma and there upon completing his life, he became a celestial being.

Chyavan Kalyanak

देव आयु पूर्णकर विनीता (अयोध्या) नगरी के इक्ष्वाकुवंशीय जितशत्रु राजा की रानी विजयादेवी के गर्भ में उपस्थति हुए। माता ने १४ दिव्य स्वप्न देखे।

After completing his life as a celestial being, he descended into the womb of queen Vijaya Devi, wife of king Jitshatru of Vinita (Ayodhya) town. Queen Vijaya Devi saw the 14 auspicious dreams.

माता के गर्भ-प्रभाव से राजा जितशत्रु का पराक्रम-प्रभाव अद्वितीय रुप में बढ़ने लगा। दुर्दान्त शत्रु भी आकर उनके सामने झुकने लगे। लोग कहते-राजा जितशत्रु तो आज संसार में अजेय योद्धा हैं। वे "अजित" हैं।

Due to the influence of queen's pregnancy, the influence of king Jitshatru enhanced to an extent that even the enemy kingdoms sought and negotiated friendly treaties with him. It became a common practice to say, King Jitshatru is invincible, He is "Ajit". (the one who cannot be conquered)

Janma Kalyanak

माघ शुक्ला अष्टमी की रात्रि में माता ने महान पुण्यशाली पुत्र को जन्म दिया। पुत्र जन्मोत्सव के समय इसी प्रभाव को स्मरण कर राजा ने पुत्र का नाम- श्री "अजित कुमार" रखा।

The Queen gave birth to a son on the eighth day of the bright half of the month of Magh. Inspired by the popular lore, of the influence by the child in the womb, the king named the new born as 'Shree Ajit Kumar'.

Rajya Abhishek

वृद्धावस्था आने पर राजा जितशत्रु ने अजितकुमार को राज्य सोंपने का विचार किया। परंतु अजितकुमार के हृदय में तो जन्म से ही विरक्ति थी। इसलिए उन्होंने राज्य स्वीकार नहीं किया। तब "सगर" को राज्य सोंपा गया।

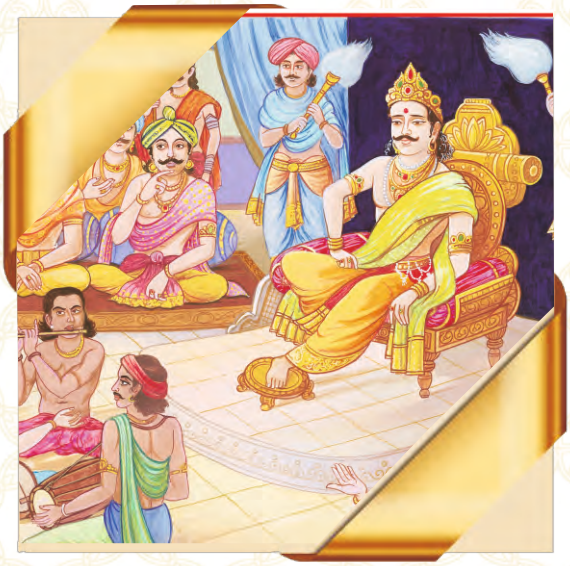

When king Jitshatru became old, He thought of giving the inheritance to his son Shree Ajitkumar. But, Ajitkumar was completely detached so he declined his father's inheritance. At last, Sagar Chakravati ascended the throne.

राजा जितशत्रु के छोटे भाई सुमित्रविजय थे। उनकी पत्नी का नाम वैजयंती था। वैजयंती ने भी १४ स्वप्न देखे। यह स्वप्न चक्रवर्ती या तिर्थंकर की माता को आते है। कुछ समय बाद उन्हें भी पुत्र-रत्न हुआ। पुत्र का नाम सगर रखा। सगर बड़े होकर चक्रवर्ती बने।

Sumitravijay was the younger brother of King Jitshatru. His wife was Vaijayanti and she also saw 14 auspicious dreams. The mother of Tirthankar or Chakravarti sees these 14 dreams. Soon, Vaijayanti gave birth to a son and he was named "Sagar". He became Chakravarti when he grew older.

Diksha Kalyanak

युवावस्था में ही अजितकुमार ने संसार त्याग दिया और एकान्त जंगलों में ध्यान तप करने लगे। उनकी साधना का प्रभाव जंगल में पशुओं पर भी पड़ा। सिंह, गाय, हाथी, हिरण आदि पशु परस्पर वैर-भाव त्यागकर परमात्मा के पास आकर प्रेम से बैठ जाते, उनके चरणों का स्पर्श कर अत्यन्त शान्ति और आनन्द का अनुभव करते थे।

Parmatma Ajitnath became an ascetic in his youth, He went into dense forests for Sadhna. The intensity of his practice casted a pacifying influence all around the animal kingdom. Lion, cow, wolf, etc elephant used to come and sit around Parmatma and the touch of his feet gave them immense peace and blissfulness.

Kevalgnan Kalyanak

दीक्षा के १२ वर्ष बाद परमात्मा अजितनाथ को उच्च ध्यान-साधना करते हुए पौष वद अग्यारस को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

After twelve years of deep meditation and other spiritual practices Parmatma Shree Ajitnath attained Omniscience on the eleventh day of bright half of Paush month.

The Divine Creation

देवताओं ने भव्य समवसरण की रचना की। परमात्मा ने देशना दी। जिसे सुनकर हजारों व्यक्तियों ने भी दिक्षा ग्रहण की।

Celestial beings (Dev) created the divine Samavsaran and Parmatma Ajitnath gave Deshna (Sermons). Thousands of people took Diksha in the presence of Parmatma in the Divine Samavasaran.

The turning point!

सगर चक्रवर्ती, राजा मेघवाहन तथा राक्षसद्वीप के विद्याधर भीम आदि परमात्मा का धर्म-उपदेश सुन रहे थे। परमात्मा की देशना से राक्षसाधिपति भीम को वैराग्य हो गया।

Chakravarti Sagar, King Meghvahan and the ruler of the Island of Rakshasas, Vidyadhar Bheem, were listening to the sermons of Parmatma Ajitnath Listening to the sermons, Vidyadhar Bheem was drawn towards Spiritual life.

उन्हानें वहीं पर राजा मेघवाहन को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर लंका तथा पाताल लंका नाम की नगरियों का राजा बना दिया। नौ बड़ी-बड़ी मणियों वाला एक दिव्य हार तथा राक्षसी विद्या मेघवाहन को देकर स्वयं परमात्मा अजितनाथ के चरणों में मुनि बनकर आत्म-साधन में प्रवृत हो गये। कहते हैं जब इन नौ मणियों का हार रावण पहनते थे तो उनके नौ प्रतिबिम्ब दिखाई देते थे। इस कारण उनका नाम "दशमुख" या "दशकन्धर" प्रसिद्ध हुआ।

He gave the inheritance to King Meghvahan and made him the king of Lanka and Patal Lanka cities. He also gave him the divine necklace of nine large shining beads along with the miraculous knowledge and powers of his family legacy. Then, he became an ascetic under Parmatma Ajitnath and got himself engrossed in Sadhna. It is said that whenever Ravana wored this Divine necklace, it gave 9 reflections of his face, and therefore he is popularly known as "Dashmukh" or "Dashkhandhar".

Nirvan Kalyanak

अपना अन्तिम समय निकट जानकर परमात्मा अजितनाथ सम्मेतशिखर पर्वत पर पधारे। उनके साथ अन्य एक हजार श्रमण भी थे। सभी ने वहाँ पर अनशन व्रत धारणकर मोक्ष प्राप्त किया। चैत्र शुक्ला पंचमी के दिन परमात्मा अजितनाथ का निर्वाण हुआ।

When the final moments were approaching, Parmatma Ajitnath went to Sammetshikhar along with 1000 other ascetics. All of them took penance of fasting and attained Nirvan. Parmatma Ajitnath attained Nirvan on the fifth day of the bright half of the month of Chaitra.

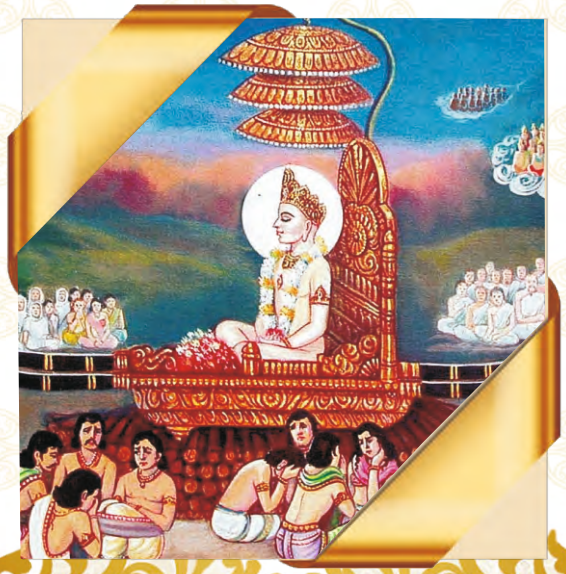

इस भव भजो शुभ भाव, बनोगे भावि के भगवान...

अपने दुर्लभ मुनष्य भव के मूल्य को पहचानकर ऐसे ही शुभ की भावना कर रहे है हमारे १२ मुमुक्षु दीक्षार्थी परमात्मा के उपकरण धारण करने के लिए व्याकुल हो रहे है।

तो चलो बच्चो, आज हम यह जानते है की हमे उपकरणो की वंदना क्यों करनी चाहिए।

- उपकरण हमें परमात्मा बनने के लिए मार्गदर्शक होते है।
- उपकरण हमारे चारित्र की शुद्धि के निमित्त होते है।
- उपकरणों की वंदना करने से हमारे अंदर से विनय गुण प्रगट होता है।
- उपकरण हमारे अनंता कर्मो की निर्जरा में सहायक होते है।
- उपकरण हमें हर कर्मो से मुक्ति दिलाकर 'नमो अरिहंताणं' पद पर बिराजमान होने में सहायक बनते है।

- Gurubhakt Mehta Parivar

Mu. Shri Avaniben Pravinbhai Parekh
(M. Optometrist)

Father : Shri Pravinbhai
Mother : Shrimati Jyotsnaben
Original Place : Savarkundla
Current Place : Mumbai

मुमुक्षु श्री अवनीबेन प्रविणभाई पारेख
(M. Optometrist)

पिता : श्री प्रविणभाई
माता : श्रीमती जोत्साबेन
मूळ वतन : सावरकुंडला
हाल : मुंबई

साची समजणथी थयुं जीवन सर्मपण!

Oh Rajoharan!

I bow down to you whole heartedly!

You help me to destroy my Karma and take me on the path of my Parmatma. I am sure you will take me to my permanent home one day... Mokshdham!! Rajoharan is my ultimate sharan which will destroy my karma.

हे रजोहरण!

तने करुं छुं हुं अगणित वंदना!!

तुं करे छे मारा कर्मोनुं हरण अने चलावे छे मने मारा प्रभुना पगले... पगले! तुं ज एक दिवस लइ जशे मने मारा शाश्वत घरे... मोक्षधाममां!! रजोहरण छे मारु शरण करे कर्मोनुं हरण...

Mu. Shri Ankitaben Dineshbhai Vora (B.com)

Father : Shri Dineshbhai
Mother : Shrimati Prameelaben
Original Place : Vadiya (Saurashtra)
Current Place : Rajkot (Saurashtra)

मुमुक्षु श्री अंकिताबेन दिनेशभाई वोरा (B.com)

पिता : श्री दिनेशभाई
माता : श्रीमती प्रमिलाबेन
मूळ वतन : वडीया (सौराष्ट्र)
हाल : राजकोट (सौराष्ट्र)

सद्गुरुना योगे प्रगट्यो संयमनो दीपक!

Oh Mukhvastrika (Muhapatti)!

I bow down to you whole heartedly!

Because of you, I can protect infinite air-borne jeevas and save my self from disrespecting Sadhu-Sant. Doing Vandana and showing Upkaar bhaav with utmost respect lightens Bhaav, Bhakti, utmost belief and Ahobhaav...

हे मुख्वस्त्रिका (मुहपत्ती)!

तने करुं हुं भावथी वंदना!!

तारा कारणे तो करी शकुं छुं हुं अनंता वायुकायना जीवोनी जतना अने बची शकुं छुं गुरु भगवंत अने साधु - संतोनी अशातनाना पापथी!! उपकार भाव अने वंदना विनय पूर्वक करवाथी आपणामां भाव, भक्ति, श्रद्धा अने अहोभाव प्रगट थाय छे.

Mu. Shri Saloniben Bakulbhai Parekh (B.com)

Father : Shri Bakulbhai
Mother : Shrimati Sonalben
Original Place : Maliya Hotina (Junagadh)
Current Place : Akola (Maharashtra)

मुमुक्षु श्री सलोनीबेन बकुलभाई पारेख (B.com)

पिता : श्री बकुलभाई
माता : श्री सोनलबेन
मूळ वतन : मालीया होटीना (जूनागढ)
हाल : आकोला (महाराष्ट्र)

जन्मो जन्मना
पुनरावर्तन पर पूर्णविराम!

Oh Aasan!

I bow down to you whole heartedly!

Because of you only, I can save the pious positive energy of remembering my Parmatma, reciting his bhakti and doing Sadhna in myself.

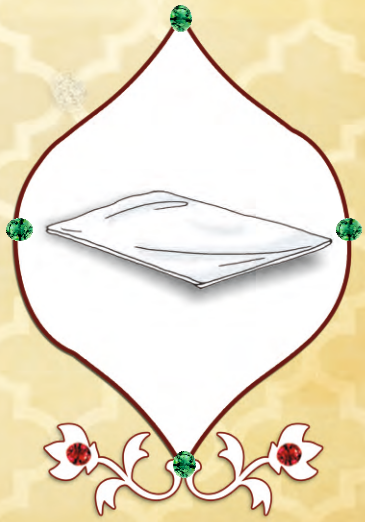

હે આસન!

તને કરું હું ભાવથી વંદના!!

તારા કારણેજ તો હું પ્રભુ સ્મરણ, પ્રભુ ભક્તિ અને સાધનાથી પ્રાપ્ત થતી શુભ-પોઝીટીવ એનર્જીને હું મારામાં ગ્રહણ કરી શકું છું...

Mu. Shri Charmiben Jitendrabhai Kamdar (IT Engineer)

Father : Shri Jitendrabhai
Mother : Shrimati Naynaben
Original Place : Kalavad (Saurashtra)
Current Place : Rajkot (Saurashtra)

मुमुक्षु श्री चार्मीबेन जितेन्द्रभाई कामदार (IT Eng.)

पिता : श्री जितेन्द्रभाई
माता : श्रीमती नयनाबेन
मूळ वतन : कालावड (सौराष्ट्र)
हाल : राजकोट (सौराष्ट्र)

एक संकेत जे थयो सार्थक!

Oh Pachedi!

I bow down to you whole heartedly!

You are the dress of my Parmatma...You remind me of my Parmatma every moment... wearing Pachedi brings me closer and closer to Parmatma and inspires me to be like him...!

हे पछेडी!

तने करुं हुं भावथी वंदना!!

तुं तो छे मारा प्रभुनो वेश... मारो प्रिय ड्रेस! याद करावे छे हर पल मने मारा प्रभुनी अने पल - पल बनुं छुं हुं मारा प्रभु जेवो... पल-पल पहोंचुं छुं हुं मारा प्रभुनी नजीक!!

Mu. Shri Paridhiben Milanbhai Mehta (B.com)

Father : Shri Milanbhai
Mother : Shrimati Beenaben
Original Place : Anjaar (Kutch)
Current Place : jariya (Jharkhand)

मुमुक्षु श्री परिधिबेन मिलनभाई महेता (B.com)

पिता : श्री मिलनभाई
माता : श्री बीनाबेन महेता
मूळ वतन : अंजार (कच्छ)
हाल : झरीया (झारखंड)

नथी भटकवुं
मारे भव भ्रमणमां!

Oh Patra!

I bow down to you whole heartedly!

Whenever I see you, I feel when will I become worthy of holding my Parmatma's Patra in my hand and I become competent enough...

हे पात्रा!

तने करुं हुं भावथी वंदना!!

तारा दर्शन करतां - करतां मारामां भाव जागे छे.. के हे प्रभु! मारी अेवी पात्रता क्यारे प्रगटशे के तारा पात्रा मारा हाथमां होय अने हुं पात्रवान बनुं!!

Mu. Shri Hetben Bhupenbhai Mehta (B.com)

Father : Shri Bhupenbhai
Mother : Shrimati Smitaben
Original Place : Mankua (Kutch)
Current Place : Kolkata (East India)

मुमुक्षु श्री हेतबेन भूपेनभाई महेता (B.com)

पिता : श्री भूपेनभाई
माता- : श्रीमती स्मिताबेन
मूळ वतन : मानकुआ (कच्छ)
हाल : कोलकता (पूर्व भारत)

सेवानो मार्ग बन्यो
सिध्धत्वनो पंथ!

Oh Mala!

I bow down to you whole heartedly!

You have become the bridge to connect my Aatma to Parmatma. Reciting my Parmatma's name awakens my Bhaav to be like him...!

हे माळा!

तने करुं हुं भावथी वंदना!!

केमके, तुं तो बने छे मारा आत्मा अने परमात्मा वच्चेनो सेतु! मारा प्रभुनुं स्मरण करतां-करतां जागे छे मारामां प्रभु जेवा बनवाना भाव!

Mu. Shri Divyaben Lalitbhai Solanki (B.com)

Father : Shri Lalitbhai
Mother : Shrimati Sumitraben
Original Place : Voghol (Rajasthan)
Current Place : Vileparle (Mumbai)

मुमुक्षु श्री दिव्याबेन ललितभाई सोलंकी (B.com)

पिता : श्री ललितभाई
माता : श्रीमती सुमित्राबेन
मूळ वतन : वोघोल (राजस्थान)
हाल : विलेपार्ले (मुंबई)

योद्धा री युद्धमां विजय!

Oh knowledge enabling books (Aagams),

I bow down to you whole heartedly!

Because of you, I get Gnan and this Gnan will Enlighten Kevalgnan in me one day, like my Parmatma.

हे ज्ञानावर्धक पुस्तको (आगम)!

तने करुं हुं उपकार भावे वंदना!! श्रुत भाव

तमारा थकी तो प्राप्त थाय छे मने ऐ ज्ञान, जे एक दिवस मारामां प्रगटावशे मारा प्रभु जेवुं केवळज्ञान!!

Mu. Shri Priyalben Harshadbhai Belani (M.com)

Father : Shri Harshadbhai
Mother : Shrimati Shobhanaben
Original Place : Lakhatar (Zalavad)
Current Place : Ahmedabad (Gujarat)

मुमुक्षु श्री प्रियलबेन हर्षदभाई बेलाणी (M.com)

पिता : श्री हर्षदभाई
माता : श्रीमती शोभनाबेन
मूळ वतन : लखतर (झालावाड)
हाल : अमदावाद (गुजरात)

दर्शननी दिव्यताए आपी दीक्षानी द्रष्टि!

Oh Guccho!

I bow down to you whole heartedly!

Because of you, I can protect infinite jeevas and save myself from demerits of violence... and bondage of bad karma.

हे गुच्छो!

तने करुं हुं भावथी वंदना!!

तारा थकी तो करी शकुं छुं हुं अनेक जीवोनी रक्षा अने बची शकुं छुं हिंसाना पापथी... अशुभ कर्मना बंधथी!!!

Mu. Shri Viranshiben Dileshbhai Bhayani

Father : Shri Heeleshbhai
Mother : Shrimati Parulben
Original Place : Laathi (Saurashtra)
Current Place : Kandivali (Mumbai)

मुमुक्षु श्री वीरांशीबेन हिलेशभाई भायाणी (H.S.C.)

पिता : श्री दिलेशभाई
माता : श्रीमती पारुलबेन
मूळ वतन : लाठी (सौराष्ट्र)
हाल : कांदिवली (मुंबई)

उपधान तप ए केडी कंडारी कल्याणनी!

Oh Vihaar!

I bow down to you whole heartedly!

Because of you, I can safeguard all beings from one sensed being to five sensed beings. You gave me an opportunity to do Shasan Prabhavana by spreading my Parmatma's vaani (teachings) among people.

हे विहार!

तने करुं छुं कायाकलेश तपथी वंदना!!

तारा थकी मने एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रिय जीवोनी जतना करतां-करतां, परमात्मानी वाणी जन-जन सुधी पहोंचाडी शासन प्रभावना करवानी अनमोल तक मळी छे!!!

Mu. Shri Chayaben Dineshbhai Kakka (B.com)

Father : Late Shri Chunilal Gharod
Mother : Late Shrimati Vimalaben Gharod
Husband : Late Shri Dineshbhai Kakka
Original Place : Bidada (Kutch)
Current Place : Mulund (Mumbai)

मुमुक्षु श्री छायाबेन दिनेशभाई कक्का (B.com)

पिता : स्व. श्री चुनिलाल घरोड
माता : स्व. श्रीमती विमलाबेन घरोड
संसारी स्वजन : स्व. श्री दिनेशभाई कक्का
मूळ वतन : बिदडा (कच्छ)
हाल : मुलुंड (मुंबई)

मारी आज्ञा बनी
मारी संयम साधना!

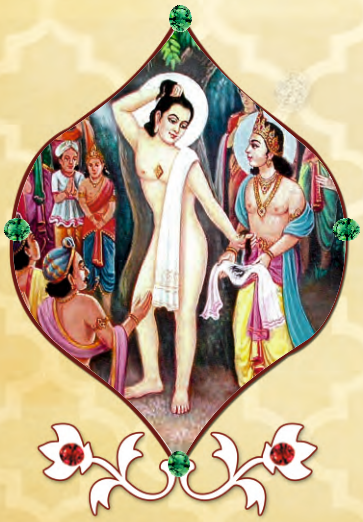

Oh Loch!

I bow down to you whole heartedly in equanimity!

Loch enables us to do the Penance of Kayaklesh to destroy our Karmas and thereby help us to reach Spiritual Supremacy.

हे लोच!

तने करुं छुं हुं समताभावे वंदना!! संसारनी सोच
कर्मोनी वोच, परम सुधी पहोंचवा, करो जीवनमां लोच...

संबंधोथी सर्मपण तरफ!

Mu. Shri Prafullaben Vegda (B.com)

Father : Shri Harjeevanbhai Gandhi
Mother : Shrimati Vijayalakshmi
Husband : Shri Harshadbhai Vegda
Original Place : Bagsara
Current Place : Ghatkopar (Mumbai)
:

मुमुक्षु श्री प्रफुल्लाबेन वेगडा (B.Com)

पिता : श्री हरजीवनभाई गांधी
माता : श्रीमती विजयालक्ष्मी गांधी
संसारी स्वजन : श्री हर्षदभाई वेगडा
मूळ वतन : बगसरा
हाल : घाटकोपर (मुंबई)
:

Oh Gochari

I bow down to you whole heartedly with feeling of sacrifice!
I wish to take food with detachment,
I think to sacrifice my taste,
I take food in Parmatmas Patra,,
This is the way of Gochari of Sadhu Bhagwant

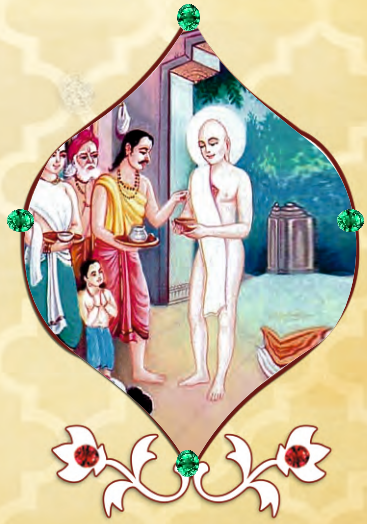

हे गोचरी!

तने करुं छुं हुं त्यागभावे वंदना!!
अनासकत भावे करुं आहार
रसपरित्यागनो करुं विचार
घरे - घरे करो मधुकरी
आ छे साधु भगवंतोनी गोचरी...

Mu. Shri Krishnaben Anandbhai Parekh (BBA)

Father : Shri Anandbhai
Mother : Shrimati Jagrutiben
Original Place : Amreli
Current Place : Raipur

मुमुक्षु श्री क्रिष्णाबेन आनंदभाई पारेख (BBA)

माता : श्रीमती जागृतीबेन
पिता : श्री आनंदभाई
मूळ वतन : अमरेली
हाल : रायपुर

स्व साथे मैत्री ए मारो संयम लक्ष्य!

LOOK N LEARN
CHILDREN'S JAIN MAGAZINE

Please contact us for your Valuable Feedbacks, Gifting a Magazine, Complains, Suggestions, or any Change of Address on...

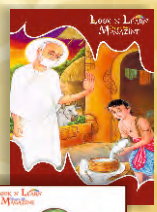

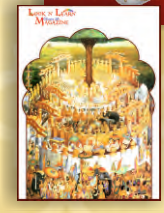

Address :- Look n Learn Magazine
Parasdham, Vallabh baug Lane,
Tilak Road, Ghatkopar (E),
Mumbai-77

Contact No :- 022-21027676

Email ID :- jainmagazine108@gmail.com

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 10, Issue: 11, Date:.10.01.2018, Postal Registration No. MNE/171/2018-20.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2018.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Ajitnath Bhagwans Family

95 Gandharva

3720 People with Chaudhpurvi

1 Lac Sadhus

9400 People with Avadhignan

3.3 Lac Sadhvijis

12500 People with Manparyavagnan

2.98 Lac Shravak

22000 People with Kevalgnan

5.45 Lac Shravika

- Nysha Doshi

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth